A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

तबले की चक्रदार रचनाओं में सांगीतिक विशेषता, प्रकार और स्वरूप

Prof. Praveen Uddhav[1], Prashant Kumar[2]

1 Research Supervisor, Department of Instrumental Music, Faculty of Music and Performing Arts, Banaras Hindu University, Varanasi-
2 Research Scholar, Department of Instrumental Music, Faculty of Music and Performing Arts, Banaras Hindu University, Varanasi

OPEN ACCESS CC BY

सार

चक्रदार रचना तबला वादन का एक कलापूर्ण और अभिन्न वादन प्रकार है, जो लयबद्ध सौंदर्य, गणनात्मक सौंदर्य और भाषाई गुण और काव्यात्मक सौंदर्य के प्रभाव को दर्शाता है। इसकी विशेषता इसकी पुनरावृत्ति, तालबद्ध संतुलन और प्रभावशाली समापन में निहित है। इसके विभिन्न प्रकार, सांगीतिक गुण, काव्यमई भाषा, आकर प्रकार, तिहाई कि विशेष संकल्पना, विश्रांति या दम का विशेष प्रयोग से इसे एक संपूर्ण कलात्मक रूप प्रदान करते हैं। चक्रदार रचनाएँ तबला शिक्षण, परंपरा एवं वादकों के लिए न केवल एक तकनीकी अभ्यास का माध्यम हैं, बल्कि ये उनके साधना, भाषा के ज्ञान, गणितीय सूझ-बूझ के साथ प्रदर्शन को भी एक ऊर्जावान और आकर्षक रूप प्रदान करता हैं। यही कारण है कि तबला की परंपरा में चक्रदार रचना के माध्यम से हमारे तबले के महर्षियों द्वारा रची गई सुंदर भाषा आज वर्तमान में हमारे पास संचित है ये दुर्लभ रचनाएं न केवल आने वाले वादकों एवं रचनाकारों का मार्गदर्शन करती हैं अपितु रचनाओं में संभावनाओं को भी दिखती है।

मुख्य शब्द: तबला, चक्रदार रचनाएं, वादन प्रकार, पेशकार कायदा, रेला लग्गी।

परिचय

तबले का भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक प्रसिद्ध और प्रमुख अवनद्ध वाद्ययंत्र होने का सबसे प्रमुख कारण, इसके विभिन्न वादन प्रकार, इस पर बजाए जाने वाली काव्यात्मक रचनाएं, समृद्ध भाषा, घराने और उनकी लंबी परंपरा है। तबला वादन की परंपरा में वादन प्रकारों को मुख्य रूप से दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया है- विस्तारशील रचनाएं एवं पूर्ण संकल्पित या अविस्तारशील रचनाएं।

तबला वाद्य मुख्य रूप से विस्तारशील रचनाओं जैसे पेशकार कायदा, रेल लग्गी आदि रचनाओं के लिए विशेष प्रसिद्ध है वही काव्य छन्द और भाषा विविधता के लिए पूर्ण संकल्पित रचनाएं बजाई जाती हैं जिनका आधार पखावज की प्राचीन भाषा से जुड़ा हुआ है एवं विस्तारशील रचनाओं में जैसे परन चक्रदार, कमली फरमाइशी, चक्रदार आदि रचनाएं छन्दोबद्ध रूप से दीर्घाकार रचनाएं होती हैं जिनका वादन में विशेष महत्व एवं आकर्षण होता है। ये रचनाएं रचनात्मक मूल्य से अति विशिष्ट होती हैं इसमें घरानों की भाषा एवं विभिन्न छंदों का रस परिलक्षित होता है घराने के लगभग सभी गुनी रचनाकारों ने अनेकानेक कई सुंदर रचनाए निर्मित की हैं और पखावज में तो उनकी बड़ी ही प्राचीन और लंबी परंपरा है। जिसमें विभिन्न प्रकार की चक्रदार रचनाएँ पाई जाती हैं। चक्रदार एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली रचना मानी जाती है। जैसा कि नाम से ही इन चक्रदार रचनाओं के स्वरूप को समझा जा सकता है, साधारण अर्थों में इसमें किसी विशिष्ट बोल या संकल्पना की पुनरावृत्ति एक निश्चित चक्र में की जाती है।

किंतु यदि सूक्ष्मता से देखा जाए तो इसमें तबले की भाषा का विस्तारण लय के विभिन्न अंग, घराना एवं शैलीगत विशेषताओं से भरा होता हैं कुछ विद्वान चक्रदार रचनाओं को पल्ला और दम दो भागों में विभक्त करते हैं चक्रदार रचनाएं गणितीय विशेषता और विभिन्न ताला कृतियों से परिपूर्ण रहती हैं। पल्ले और दम के विभिन्न सहयोग से अलगअलग प्रकार की चक्रदार रचनाएं स्थापित होती है तथा कुछ विद्वान प्रत्येक पल्ले में, मुखड़ा, तिहाई एवं दम ऐसे तीन भागों में विभक्त करते हैं जिसमें प्रत्येक पल्ले में मुखड़ा और तिहाई का भाग कितना होगा इस पर विचार कर रचना को आकर्षित बनाते हैं चक्रदार ऐसी रचना है जिसमें दम का विशेष आनंद प्राप्त होता है विभिन्न विश्रांति काल से चक्रदार रचनाओं में आनन्द प्राप्त होता है चक्रदार रचना तिहाई का ही बृहद स्वरूप है जिस प्रकार तिहाई में मुखडे का लोप करके साधारण रचना को तीन बार पुनरुक्ति करके सम पर आया जाता है वहीं चक्रदार रचनाओं में भाषा की प्रधानता के रूप में मुखड़ा, तिहाई और दम तीनों का स्वरूप देखने को मिलता है।

चक्रदार रचनाओं में विभिन्न छन्दोगतियां नाना प्रकार की भाषाओं के आनंद के साथ-साथ क्लिष्ट दम द्वारा निर्मित भाषा और विभिन्न अनुभवों की अनुभूति की जा सकती है जिससे न केवल लयबद्ध सौंदर्य बढ़ता है, बल्कि वादक की तकनीकी क्षमता और तालगत समझ भी समृद्ध और पुष्ट होती है। चक्रदार रचनाओं के नियत अभ्यास से काव्यात्मक भाषा का विकास, घरानों के विचार और निकास, हस्त संचालन, पखावज और पूरब अंग का वजन को वादक अर्जित कर पाता है। तबले की विभिन्न रचनाएं अलग-अलग रसों से प्रभावित है वहीं चक्रदार वीर रस प्रधान काव्य रचना होती हैं जिसमें ध्वनि उत्सर्जन प्रचुर मात्रा में किया जाता है जिससे वादक के वादन में नादात्मकता की बहुल्यता प्रस्तुतीकरण में चमत्कार उत्पन्न होता है।

चक्रदार रचना की विशेषता

चक्रदार रचना अन्य रचनाओं से अलग होती है, क्योंकि इसमें बोलों का एक विशेष अनुक्रम तीन बार दोहराया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य ताल और लय की सुंदरता को उभारना और वादन को एक प्रभावशाली तत्व प्रदान करना होता है। पंडित सुधीर माईणकर के अनुसार चक्रदार बंदिश दीर्घ आकार कि वह रचना है जिसका आखिरी अंग तिहाई होता है और वह पूर्ण रचना जो सम से शुरू होकर, तीन बार बजाने से सम पर आती है। इस प्रकार की रचना में बंदिशकार विविध प्रकार की भाषा का प्रयोग, विभिन्न बंदिशों में करते हैं ऐसी बंदिशों की निर्मिती के लिए उनके द्वारा किसी न किसी प्रकार का पूर्वनियोजित भाषा का चयन किया हुआ होता है। जब भी चक्रदार शब्द का प्रयोग होता है तब वह बंदिश के ढांचे के बारे में विशिष्ट जानकारी देती है बंदिश की प्रस्तुतीकरण में सम स्थान और उसमें निहित तिहाईयों की योजना तथा योजनाबद्ध आघात, विश्रांति काल द्वारा चक्रदार बंदिशों की संरचना पूर्ण होती है। जिस प्रकार तबले की अन्य विस्तारशील रचनाएं तालांग के बहुत निकट प्रतीत होते हैं वहीं चक्रदार बंदिशे ताल की आवर्तन संख्या से संबंधित है।

इसका अर्थ यह नहीं है की चक्रदार बंदिशों का संबंध ताल से नहीं है किंतु जिस प्रकार ताल की आकृति और खाली - भरी की संकल्पना अन्य विस्तारशील रचनाओं में दिखती है वैसी संकल्पना पूर्वनियोजित या अविस्तरशील रचनाओ में नहीं होती है क्योंकि हर बंदिश की एक आकृति होती है उनको प्रस्तुत करने का एक अलग उद्देश्य होता है जिसके तहत हर बंदिशों के लिए अलग-अलग नियम निश्चित है। इसका कारण बहुत अर्थों में इस बंदिश की संरचना, उस बंदिश का विचार और उद्देश्य है। चक्रदार रचना का उपयोग अक्सर वादक अपनी प्रस्तुति को एक ऊर्जावान और नादात्मकता के साथ समापन करने में करते है। चक्रदार रचना में किसी विशेष वाक्यांश या बोलों को तीन बार बजाया जाता है, जिससे सुनने वालों में स्पष्टताआती है। यह चक्र लयबद्ध सौंदर्य और तालबद्ध अनुशासन को प्रकट करता है। यह विशेष रूप से एकल तबला, साथ संगत और कत्थक नृत्य प्रस्तुतियों में देखने को मिलता है।

चक्रदार रचनाओं का सौंदर्य इस बात पर निर्भर करता है कि उसे कितनी स्पष्टता, नादात्मकता, से बजाया जाता है। वादक को प्रत्येक बोल को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना चाहिए ताकि उसकी पुनरावृत्ति प्रभावशाली लगे, इसी के साथ-साथ वह किस घराने से संबंधित है तथा रचनाकार किस उद्देश्य से वह रचना बंधी है यह सुनिश्चित होना चाहिए तभी वह रचना प्रभावकारी होगी।चक्रदार रचना में ताल के प्रत्येक आवर्तन की गहरी समझ होनी चाहिए।चक्रदार रचना में तालबद्ध संतुलन बनाए रखना आवश्यक होता है। यदि कोई भी चक्र मात्रा से आगे या पीछे हो जाए, तो रचना का प्रभाव समाप्त हो सकता है। प्रत्येक चक्र को सही ढंग से प्रस्तुत करना और उसे सम पर प्रभावी रूप से समाप्त करना अत्यंत आवश्यक होता है।

चक्रदार रचना का स्वरूप

किसी भी रचना का स्वरूप उसमें निहित घटकों और विशेषताओं से बनता है जब हम विशेषताओं की बात करते हैं तो हम उसमें निहित सौंदर्य बिंदुओं को देखने की कोशिश करते हैं चक्रदार रचनाओं में भी ऐसी ही विशेषताएं और तत्व होते हैं जिसके कारण इनकी एक अलग पहचान व्यक्तित्व और लय ताल के संदर्भ में इनका विशेष उद्देश्य होता है। चक्रदार रचना का स्वरूप इसे अन्य रचनाओं से अलग बनाता है। इसमें निम्नलिखित तत्व सम्मिलित होते हैं-

1. **मुख्य बोल या मुखड़ा चक्रदार -**

रचनाओं में प्रत्येक पल्ले में मुखड़ा और तिहाई दो भाग होता है। जिसमें मुखड़ा उस बंदिश की भाषा और विचारधारा अर्थात् उस बंदिश की मूल प्रकृति किस घराने और विचारधारा से प्रभावित है यह उसके मुखड़े या मुख्य बोल से निर्धारित होता है। जैसे कि वह किस जाति, घराने या छंद आदि में रची गई है। चक्रदार रचनाओं के विभिन्न प्रकार प्रचलित हैं जैसे चक्रदार परण, गत चक्रदार आदि मुखड़ा या मुख्य बोलो से यह निर्धारित किया जाता है की प्रस्तुत चक्रदार, परण की भाषा में बंधी है या गत की भाषा में बनी है, शृंगारिक प्रकृति की है या वीर रस को प्रकट करती है आदि। यह विभिन्न तथ्य हमें मुखड़े से उनके आकार प्रकार, और भाषा का सही अनुमान लगता है। मुखड़ा चक्रदार रचना का एक मूल बोल होता है, जो पूरे वादन का आधार बनता है।

2. **पुनरावृत्ति चक्रदार -**

इस रचना की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी कलात्मक पुनरावृत्ति में निहित है। पुनरावृत्ति का अर्थ पुनरुक्ति करना या दोहराना होता है किंतु चक्रदार रचनाओं में पुनरावृति एक उद्देश्य पूर्ति के लिए की जाती है आमतौर पर पुनरावृति से उबान पैदा होती है किंतु यह संगीतिक रचना कलात्मक रूप से

पुनरावृति एवं सांगीतिक गुणों से सुसज्जित होती हैं अर्थात् यह पुनरुक्ति आह्लाद और आनंद प्रदान करने वाली होती है इसमें कलाकार नादात्मकता में विभिन्न प्रयोग द्वारा उस पुनरुक्ति को आकर्षक बनाता है। वही पुनरुक्ति एक पूर्ण यात्रा को बंदिश के रूप में जो सम पर पूर्ण होती है को दर्शाती है।

3. **गतिशीलता और प्रवाह**

जिस प्रकार नदी अपने उद्गम स्थान से चलकर सागर में मिलती है उसी प्रकार चक्रादार सम में विलीन हो जाता है। चक्रदार रचना अपना भाषाई प्रवाह के साथ चलता है। इसे इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि प्रत्येक चक्र एक प्राकृतिक लय में आगे बढ़े और सम में प्रभावी रूप से लीन हो।

विभिन्न रचनाएँ विभिन्न गतियों में अपने उद्गम स्थान से सम पर जाकर लीन हो जाती है। उद्गम स्थान पर उनकी गति और प्रवाह सौम्य होता है वहीं जब किसी विशाल नदी से जाकर मिलती हैं तब उसका स्वरूप बृहद और विकराल हो जाता है तथा सागर में मिलने के बाद सागर और नदी एक समान हो जाते हैं अर्थात् कोई भी रचना सम पर अपने पूरे प्रवाह और गतिमानता के साथ तथा जो उस रचना का वेग, व्यवहार और व्यक्तित्व है उसके साथ विलीन हो जाती है।

4. **तिहाई**

तिहाई कि संकल्पना भारतीय संगीत में महत्वपूर्ण स्थान रखता है इसके अनेक कारण दृष्टिगत है कुछ इसे त्रिगुण प्रकृति ध्वनि उत्सर्जन एवं मानव जाति के विकास से जोड़ते हैं तिहाई की संकल्पना न केवल संगीत जगत में अपितु आध्यात्मिक जगत् में भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है जिसका प्रयोग हमारी सनातन परंपरा में भी प्राचीन काल से होता है एक विचार को तीन बार दोहराने की परंपरा रही है जिसका मनोवैज्ञानिक कारण भी है तथा उनमें पुनरुक्ति से पढ़ने वाले प्रभावों को भी देखा गया है जो अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं। इसी विचार के साथ तिहाई की संकल्पना को संगति के विचार के साथ गायन वादन नृत्य तीनों विधाओं में विशेष रूप से सम्मिलित किया गया। चक्रदार रचनाओं में भी इनका प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाता है।

चक्रदार में मुखड़े के बाद तिहाई का पल्ला पूर्ण होता है और इसे तीन बार पुनरुक्ति करने के बाद अंत में तिहाई से ही समाप्त किया जाता है। चक्रदार रचनाओं में ऊर्जा प्रवाह तथा सम आने का सौंदर्य निर्धारित तिहाई में ही निहित होता है जिससे सम पर आने का सौंदर्य और श्रोताओं में सम का पूर्वाग्रह होने लगता है जिससे रोचकता और रंजकता स्पष्ट होती है।

5. **विश्रांति या दम**

तबला और पखावज की समस्त रचनाएं काव्यात्मक है और काव्य में यति अर्थात् विश्रांति का विशेष महत्व है विश्रांति से ही काव्य में लयबद्ध सौंदर्य उत्पन्न होता है लय की स्थापना भी बिना विश्रांति के संभव नहीं है यह काव्य रचनाओं का प्राण है छंद शास्त्र में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है एक ही गण और अक्षर संख्या होने के बाद भी विश्रांति की भिन्नता होने के कारण छंद बदल जाते हैं। चक्रदार रचनाओं में इन्हें दम से संबोधित किया जाता है चक्रदार रचनाओं में दम को दर्शाने का एक कलात्मक स्वरूप भी है जिससे रचना के मध्य दोनों दम कलात्मक रूप से स्पष्ट होते हैं और चक्रदार की सौंदर्य वृद्धि करते हैं। एक ही आकर या मात्रा के पल्ले को दम परिवर्तित कर किसी भी अन्य ताल में बांधा जा सकता है। साधारणतया कहा जाए तो दम के आधार पर ही तीनों पल्लों को अलग-अलग स्पष्ट रूप से देखे जाते हैं यदि दम ना हो तो साधारण श्रोता जिन्हें तबला और पखावज की भाषा उतनी व्यावहारिक नहीं है, वे लोग उसे तिहाई या चक्रदार का आनंद नहीं ले सकते, यह दम ही है जो सभी पल्लो को स्पष्ट रूप से प्रकट करता है। चक्रदार रचनाओं में विश्रांति या दम की महत्ता के कारण सभी चक्रदार रचनाएं कमाली, फरमाइशी, चक्रदार टुकड़े, चक्रदार गत, चक्रदार तिहाईयां, नौहक्का को विश्रांति या दम के आधार पर दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया है -

चक्रदार रचना के प्रकार

चक्रदार रचना के निम्न प्रकार प्रचलित हैं, जिनका उपयोग वादन व नृत्य की विभिन्न शैलियों और घरानों में किया जाता है।

1. **साधारण चक्रदार -**

इस प्रकार की रचना में किसी टुकड़े की भाषा, या गत रचनाओं की छोटे से भाग को लेकर तथा उसमें तिहाई की संकल्पना जोड़कर आवश्यकता अनुसार आवर्तन एवं मात्राओं का निर्धारण कर चक्रदार के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। तबला बोल या संकलन को तीन बार दोहराया जाता है। इस प्रकार की रचना विद्यार्थी को विद्यार्जन के प्रारंभिक काल में सिखाया जाता है जिससे वह चक्रदार रचनाओं की विशेषताओं से परिचित हो। इस प्रकार के चक्रदार रचनाओं में बहुत अंश सुंदर चलान और आकृति या बहुत ही गहरी बात को बहुत ही छोटे से कालक्रम में चक्रदार के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह अत्यंत ही वेगपूर्ण और आकर्षक रचना होती है।

2. **कमाली चक्रदार रचनाएं**

वैसे तो चक्रदार रचनाओं की कोई निश्चित भाषा नहीं होती है यह किसी भी घराने की भाषा में बंद हो सकते हैं। ये रचनाएं परन की भाषा, गतों की भाषा एवं कुछ रेले की भी भाषा से बंधी हो सकती हैं किंतु कमाली चक्रदार रचना अपने आकार एवं बहुआवर्तनीय गुन के लिए जानी जाती हैं। इनमें तिहाईयों की एक विशेष व्यवस्था और संरचना होती है जिसके कारण यह अन्य चक्रदार रचनाओं से अति विशेष होतीहै। यह न्यूनतम सात आवर्तन की हो सकती हैं एवं प्रत्येक पल्ले की तिहाई में 9 'धा' समाहित होते हैं एवं पूरे चक्रदार रचना में 27 'धा' निहित होते हैं और इन 27 'धा' में प्रत्येक 'धा' का अपना एक स्थान निर्धारित होता है। इस रचना में मुख्य रूप से पहले पल्ले के तिहाई के पहले'धा' सम पर आता है वहीं दूसरे पल्ले के तिहाई का पांचवा 'धा' सम पर आता है तथा अंतिम पल्ले का तिहाई का 9 वां 'धा' सम पर आता है। इस प्रकार इसमें चक्रदार के अंत में तिहाई का विशेष प्रयोग किया जाता है, जिससे उसका समापन अधिक प्रभावशाली बनता है।

3. **फरमाइशी**

कमाली चक्रदार रचना की भांति ही फरमाइशी चक्रदार की भी अपनी विशेषता है यह रचना न्यूनतम पांच आवर्तन तक की हो सकती है इस रचना में मुखड़े और तिहाई का विशेष महत्व है मुखड़े के अनुरूप तिहाई का ऐसा संयोजन इस रचना में रखा जाता है कि उनकी तिहाई में निहित 'धा' स्थान दर्शनीय होता है। इसके प्रत्येक पल्ले में तीन 'धा' होते हैं एवं पूरी चक्रदार में 9 'धा' समाहित होते हैं। इस रचना का विशेष आकर्षण तिहाई में निहित 'धा'के स्थान से होता है, जिसमें पहले पल्ले में तिहाई का पहला 'धा' सम पर आता है, वहीं दूसरे पल्ले में तिहाई में निहित दूसरा 'धा' सम पर आता है और अंतिम पल्ले में तिहाई में निहित अंतिम 'धा' यानी 9 वां 'धा' सम पर आता है। इस प्रकार की चक्रदार रचना में परन के बोलों का समावेश होता है, जो विशेष रूप से पखावज, कत्थक की भाषा एवं पंजाब में बजने वाली बंदिशों की विशेषता पखावज के बोलो से सजी-धजी होती हैं इन रचनाओं में पंजाब की बोल वाणी का गूंथाव एवं क्लिष्ट शब्दाबन्धों और लयाघातों से युक्त होता है। इसमें प्रत्येक चक्र में कुछ नए बोल जोड़े जाते हैं, जिससे रचना एक विस्तृत और बहुपरत रूप में प्रस्तुत होती है। इस प्रकार की रचना में तिहाईयों का आकार भी दीर्घ एवं बहुआयामी होता है।

4. **लमछड़ चक्रदार रचनाएं**

साधारणतः चक्रदार रचनाएं दीर्घाकार की होती हैं। साधारणतः दो आवर्तन से कम की चक्रदार नहीं पाई जाती हैं और फरमाइशी, कमाली जैसी रचनाएं पांच या सात आवर्तन तक की हो सकती है किंतु लक्षण चक्रदार रचनाएं उक्त सभी रचनाओं से भी आकार में बड़ी होती है। ये रचनाएं जो कि किसी भी घराने से सम्बन्धित हो सकती है किंतु यह विशेषता पंजाब घराने में पाई जाती है लक्षण चक्रदार रचनाएं पंजाब की भाषा एवं पंजाब में बजाने वाली बंदिशों की विशेषता पखावज के बोलों से सजी-धजी होती हैं। इन रचनाओं में पंजाब की बोल वाणी का गूंथाव एवं क्लिष्ट शब्दबन्धों और लयाघातों से युक्त होता है। इसमें प्रत्येक चक्र में कुछ नए बोल जोड़े जाते हैं, जिससे रचना एक विस्तृत और बहुपरत रूप में प्रस्तुत होती है। इस प्रकार की रचना में तिहाईयों का आकार भी दीर्घ एवं बहुआयामी होता है।

5. **विभिन्न मात्राओं से बजने वाली चक्रदार रचनाएं**

संगीत में रचनाकारों द्वारा प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक कई प्रयोग की अवधारणाएं संगीत में आए हैं संगीत ललित कलाओं में सर्वश्रेष्ठ कला मानी जाती है और कला में नवीनता उसका गुण धर्म है नवीनता से संगीत और कला में आकर्षण, वैशिष्ट्य और असाधारणता बनी रहती है।

प्रयोगात्मक, काव्यात्मक और रचनात्मक संगीत ही चिरकाल तक जीवित रहता है क्योंकि उसका असर श्रोता और कलाकारों पर समग्र रूप से पड़ता है और संगीत में आकर्षण वेग भाव अभिव्यक्ति ना हो तो वह शैली, बंदिश या संगीत कालांतर में समाप्त हो जाते हैं। संगीत में बौद्धिकता और रचनात्मक दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है जिसका असर तबले की रचनाओं पर भी होता रहा है। तबले व पखावज की चक्रदार रचनाएं साधारणतः सम से प्रारंभ होकर सम पर अपनी यात्रा पूर्ण करती हैं। किंतु पखावज में विभिन्न मात्राओं से प्रारंभ होने वाली चक्रदार का प्रचलन है तथा इनका वादन तबले में भी किया जाता है। इस प्रचलन को तबले के महान रचनाकारों ने भी आत्मसात कर तबले की भी मौलिक भाषा और रचनाओं को विभिन्न मात्राओं से उठने वाली चक्रदार में बांधा है। जैसे पंजाब और बनारस घराने में इनका स्वरूप पारंपरिक बंदिश के रूप में देखने को मिलता है तथा इसका अनुसरण कर वर्तमान के कई रचनाकार भी अपने-अपने घराने में अलग-अलग मात्राओं से उठने वाली चक्रदार बंदिशों की रचना कर रहे हैं और उनका वादन भी हो रहा है। इन रचनाओं से कलाकार में प्रत्येक मात्रा से बनने वाली भाषा का ज्ञान, उनका चलन और तालांग और लयांग की विशेष प्रशिक्षण और अनुभूति विकसित होती है जिससे वह उपज क्रियाओ में भी दक्ष हो सकता है। इस प्रकार की रचनाएं कलाकार की स्मरण शक्ति बौद्धिक क्षमता एवं प्रत्येक मात्रा के प्रति उसकी जागरूकता को बढ़ाती है जिससे वह प्रत्येक मंत्र के प्रति सजग होता है और धीरे-धीरे इन चक्रदार

रचनाओं के अभ्यास से वह सहजता से किसी भी मात्रा से भाषा को विस्तारित कर चक्रदार रूप प्रदान कर सकता है। कुछ विद्वान कलाकार और वादक तो लघु मात्रा काल से भी चक्रदार रचनाएं प्रस्तुत करते हैं किंतु यह बड़े ही अभ्यास के बाद साधक को प्राप्त होती है।

छंद और जाति आधारित चक्रदार रचनाएं

छंद, लय ताल का प्राण तत्व है। तबले की काव्यात्मक रचनाएं स्वत: ही छंद को प्रदर्शित करते हैं। छंद के समावेश से यह विभिन्न रूप रंग की प्रतीत होती है। लय और छंद के समावेश से इनमें आह्लाद उत्पन्न होता है। छंद तबले के रचनाकारों के आकर्षण का विषय रहा है इसका कारण तबले की भाषा में निहित नादात्मक सौंदर्य एवं विभिन्न समीकरण है। तबले की इतनी वृहद परंपरा एवं उनमें वादन प्रकार में विविधता छंद की ही देन है ताल का आधार भी छन्द ही है। एक ही भाषा की रचना को विभिन्न छंद और जातियों में बांधने से बंदिश का आना-जाना, स्वभाव, प्रकृति, रस निष्पादन और उद्देश्य परिवर्तित हो जाता है यही जाति और छंद की महिमा है। वर्तमान काल में तो जाति और छंद का इतना प्रभाव है की तबला वादक किसी विशेष जाति में ही अपना पूर्ण एकल तबला वादन प्रस्तुत करते हैं। लगभग सभी ग्रहों में भिन्न जातियों में चक्रदार रचनाएं चक्रदार परन चक्रदार रची गई हैं। जातियों में पूर्ण संकल्पित रचनाओं का अधिक आनंद प्राप्त होता है और इसमें भाषा का विस्तारण होता है दूसरे शब्दों में तबले की भाषा विस्तारण में पूर्ण संकल्पित रचनाओं का विशेष योगदान है क्योंकि विस्तारशील रचनाओं में भाषा और मात्राओं का कुछ बंधन आवश्यक होता है किंतु पूर्ण संकल्पित रचनाओं में भाषा का विस्तारण स्वतंत्र रूप से चलता है जब तक की रचनाकार की बात पूरी ना हो जाए तथा अंत में तिहाईयों का उपयोग करके उन्हें पूर्ण बंदिश का स्वरूप दिया जाता है। इसलिए चक्रदार रचनाओं में जाति और छंदों का विशेष आनंद प्राप्त होता है यह उन्मुक्त रूप से छंदों एवं विभिन्न जातियों में डूबी हुई विस्तारित होती हैं। ऐसी भी रचनाएं दृष्टिगत है जिसमें जाति भेद देखा जाता है प्रत्येक पल्ले में विभिन्न जातियों और छंदों का प्रयोग कर प्रस्तुत किया जाता है जिससे यह असाधारण प्रतीत होते हैं।

चक्रदार परण

इस प्रकार की चक्रदार रचनाएं विशेषतः पखावज पर बजाई जाती हैं परन रचना प्रकार पखावज वाद्य का प्रमुख वादन प्रकार है। ये रचनाएं वीर रस एवं भाषा में शब्द संवाद से रची होती हैं। इनमें भाषा के गुण के साथ-साथ अद्भुत रस का उत्सर्जन होता है। यह दीर्घाकार की चक्रदार रचनाएं बड़े ही पखावज की पारंपरिक भाषा से बंधी हुई होती हैं। इनमें शब्द संयोजन परस्पर दोहराते हुए होते हैं जिसमें इनमें भाषा का विशेषता भी देखने को मिलती है। ये रचनाएं तबले पर विशेष कर पूरब बाज में बजाई जाती है। इन चक्रदार रचनाओं के प्रस्तुतीकरण के उपरांत श्रोता इस रचना की गंभीर भाषा और नाद ध्वनि से आकर्षित होता है एवं शब्द पुनरावृत्ति के कारण यह मन मस्तिष्क पर एक विशेष सांगीतिक प्रभाव डालती है।

कत्थक और नृत्य संगत में चक्रदार रचनाएं

चक्रदार की संकल्पना जितनी पखावज और तबले में प्रस्तुत और बजाई जाती है उतना ही विशेष रूप से कत्थक नृत्य में चक्रदार रचनाएँ प्रस्तुत की जाती रही हैं। कुछ तबला एवं पखावज की बंदिशें इतनी सौंदर्यपूर्ण है की नृत्यकार उसे हूबहू अपने कार्यक्रमों में प्रस्तुत करते हैं। कथक नृत्य में चक्र का विशेष महत्व है जिसे कलाकार अलग-अलग भाव भंगिमाओ के द्वारा चक्र को प्रस्तुत करता है, ऐसी रचनाएं जिसमें नौ चक्र, 11 चक्र, 51 चक्र, 108 चक्र तक की रचनाएं प्रस्तुत की जाती है। कथक नृत्य में ऐसी भी रचनाएं तबला वादकों ने और नर्तकों ने रची है जिसमें तिहाई के स्थान पर 9, 11 'धा' के साथ प्रस्तुत किया जाता है। यह रचनाएं जितनी सुनने में आकर्षित करते हैं उतना ही तबला पर बजाने में और पढ़न्त में आनंद और रंजकता प्रदान करते हैं। ये रचनाएं श्रोताओं में उत्साह और आनंद भरती हैं। इन्हें नर्तक लयबद्ध रूप से प्रस्तुत कर अपनी भाव-भंगिमा और गति का प्रदर्शन करते हैं।

निष्कर्ष

चक्रदार रचना तबला वादन का एक कलापूर्ण और अभिन्न वादन प्रकार है, जो लयबद्ध सौंदर्य, गणनात्मक सौंदर्य और भाषाई गुण और काव्यात्मक सौंदर्य के प्रभाव को दर्शाता है। इसकी विशेषता इसकी पुनरावृत्ति, तालबद्ध संतुलन और प्रभावशाली समापन में निहित है। इसके विभिन्न प्रकार, सांगीतिक गुण, काव्यमई भाषा, आकर प्रकार, तिहाई कि विशेष संकल्पना, विश्रांति या दम का विशेष प्रयोग से इसे एक संपूर्ण कलात्मक रूप प्रदान करते हैं। चक्रदार रचनाएँ तबला शिक्षण, परंपरा एवं वादकों के लिए न केवल एक तकनीकी अभ्यास का माध्यम हैं, बल्कि ये उनके साधना, भाषा के ज्ञान, गणितीय सूझ-बूझ के साथ प्रदर्शन को भी एक ऊर्जावान और आकर्षक रूप प्रदान करता हैं। यही कारण है कि तबला की परंपरा में चक्रदार रचना के माध्यम से हमारे तबले के महर्षियों द्वारा रची गई सुंदर भाषा आज वर्तमान में हमारे पास संचित है ये दुर्लभ रचनाएं न केवल आने वाले वादकों एवं रचनाकारों का मार्गदर्शन करती हैं अपितु रचनाओं में संभावनाओं को भी दिखती है। इस प्रकार चक्रदार रचनाएं एक अनिवार्य और

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

मूल्यवान संरचना के रूप में तबला वादकों, पखावज वादकों, नृत्यकार एवं संगीत साधकों के मध्य आज भी प्रतिष्ठित हैं और आदर पूर्वक प्रस्तुत की जाती है।

संदर्भ

1. पंडित सुधीर माईणकर, तबला वादन कला एवं शास्त्र
2. पंडित अरविंद मुगांवकर, तबला
3. प्रो. प्रवीण उद्धव, 1) तबला साहित्य 2) तबला काव्य के रूप रंग
4. प्रोफेसर प्रवीण उद्धव, साक्षात्कार
5. पंडित सुरेश तलवलकर, साक्षात्कार
6. गिरीश चंद्र श्रीवास्तव, ताल परिचय भाग 3
7. पंडित नंदलाल शर्मा पथिक, तबला विज्ञान
8. पं0 छोटे लाल मिश्र, ताल प्रबंध
9. विद्यानाथ सिंह, ताल सर्वांग
10. डॉ0 आबान इ0 मिस्त्री, पखावज और तबले के घराने एवं परंपराएं
11. प्रो० योगमाया शुक्ला, तबले का उद्गम विकास एवं वादन शैलियां